Toppersnotes
Unleash the topper in you

ग्राम विकास अधिकारी
(VDO)
मुख्य परीक्षा

राजस्थान कर्मचारी चयन बोर्ड, जयपुर

भाग - 2

भारत का सामान्य ज्ञान

SIERRA INNOVATIONS

VDO - MAINS

भारत का भूगोल

क्र.सं.	अध्याय	पृष्ट सं.
1.	भारत का विस्तार	1
2.	भारत के भौगोलिक भू–भाग	4
3.	भारत का अपवाह तंत्र	10
4.	जैव विविधता	17
5.	भारत की मिट्टी मृदा	23
6.	जलवायु	24
7.	भारत में खनिजों का वितरण	25
8.	भारत के प्रमुख उद्योग	28
9.	परिवहन	31
10.	कृषि	35
11.	भारत में निवास करने वाली जनजातियाँ	37
12.	भौतिक भूगोल	39
13.	विश्व भूगोल के कुछ महत्वपूर्ण तथ्य	43
14.	पारिस्थितिकी तंत्र	52

भारत का इतिहास

1.	प्राचीन इतिहास	62
	• सिन्धु घाटी सभ्यता	64
	• वैदिक काल	68
	• बोद्ध धर्म	72
	• जैन धर्म	74
	• महाजनपद काल	75
	• मौर्य वंश	77
	• गुप्त वंश	80

2.	मध्यकालीन भारत	86
	• भारत पर आक्रमण	86
	• सल्तनत काल	87
	• मुगल काल	93
	• भक्ति एवं सूफी आन्दोलन	99
	• मराठा उद्भव	
3.	आधुनिक भारत का इतिहास	102
	• भारत में यूरोपियन शक्तियों का आगमन	102
	• मराठा शक्ति का उत्कर्ष	105
	• अंग्रेजो की भू–राजस्व पद्धतियाँ	107
	• गवर्नर व वायसराय	110
	• 1857 की क्रान्ति	116
	• प्रमुख आन्दोलन	118
	• कांग्रेस अधिवेशन	120
	• भारतीय क्रांतिकारी संगठन	131
	अन्य सामान्य ज्ञान	
1.	विश्व के महासागर एवं सागर	134
2.	विश्व की प्रमुख पर्वत श्रेणियां एवं चोटियां	136
2.	भारत के प्रमुख बांध	140
3.	भारत के पक्षी अभ्यारण	141
4.	भारत की जनसंख्या	142
5.	भारत के प्रमुख बंदरगाह	143
6.	भारत में प्रमुख नृत्य	144
7.	अंतर्राष्ट्रीय सीमा रेखाएं	145
8.	भारत के प्रमुख स्टेडियम	145
9.	प्रमुख व्यक्ति एवं उनके उपनाम	147
10.	भारत के प्रमुख स्थल एवं उनके निर्माणकर्ता	147

11.	राज्य एवं उनके मुख्यमंत्री	148
12.	भारत के राष्ट्रपति	149
13.	भारत के प्रधानमंत्री	149
14.	लोकसभा अध्यक्ष	150
15.	संघ लोक सेवा आयोग के वर्तमान एवं पूर्व चेयरमैन	151
16.	भारत के मुख्य निर्वाचन आयुक्त	151
17.	प्रमुख उच्च न्यायालय	152
18.	भारत के उच्चतम न्यायालय के मुख्या न्यायाधीश	152
19.	नोबेल पुरस्कार प्राप्त भारतीय	154
20.	केंद्रीय मंत्रिपरिषद्	154
21.	भारत में सर्वाधिक बडा, लम्बा एवं ऊँचा	158
22.	भारत में प्रथम पुरूष	159
23.	यूनेस्को द्वारा घोषित भारत के विश्व धरोहर स्थल	162
24.	भारत के राष्ट्रीय प्रतीक व चिन्ह	163
25.	अविष्कार–अविष्कारक	164
26.	अंतर्राष्ट्रीय संगठनों के महत्वपूर्ण तथ्य	166
27.	प्रसिद्ध पुस्तक व उनके लेखक	168
28.	खेलकूद	170
29.	विश्व की प्रमुख जल संधि	175
30.	प्रमुख पर्यावरण सम्मेलन	177

भारतीय भूगोल (Indian Geography)

भारत का विस्तार

- भारत एक विशाल देश है । इसकी विशालता के कारण इसे उपमहाद्वीप की संज्ञा की गई है यह विश्व का अकेला देश है जिसका नाम हिन्द महासागर से जुडा है ।
- भारत की स्थिति उत्तरी गोलार्द्ध एवं पूर्वी देशांतर मध्य में है ।
- भारत की आकृति चतुष्कोणीय है ।
- भारत का अक्षांशीय विस्तार 8°4 से 37°6 उत्तरी गोलार्ध में है ।
- अक्षांश कि दृष्टि से भारत उत्तरी गोलार्द्ध का देश तथा देशान्तर की दृष्टि से पूर्वी गोलार्द्ध के मध्य में है ।
- देशांतरीय विस्तार 68°7 से 97°25 पूर्वी देशांतर में है ।
- भारत का विश्व में क्षेत्रफल की दृष्टि से सातवां एवं जनसंख्या की दृष्टि से दूसरा स्थान है।

विश्व में स्थान	देश का नाम	
	क्षेत्रफल के अनुसार	जनसंख्या के अनुसार
प्रथम	रूस	चीन
द्वितीय	कनाडा	भारत
तृतीय	चीन	यू.एस.ए
चतुर्थ	यू. एस. ए.	इंडोनेशिया
पंचम	ब्राजील	ब्राजील
षष्ठ	ऑस्ट्रेलिया	पाकिस्ताान
सप्तम	भारत	नाईजीरिया
अष्टम	अर्जेनटीना	बांग्लादेश

भारत के पाँच शीर्ष क्षेत्रफल वाले राज्य

क्र.सं.	राज्य	क्षेत्रफल (वर्ग किमी.)
1.	राजस्थान	3,42,239
2.	मध्यप्रदेश	3,08,000
3.	महाराष्ट्र	3,07,713
4.	उत्तरप्रदेश	2,40,928
5.	आन्ध्रप्रदेश	1,60,205

भारत के शीर्ष क्षेत्रफल वाले 5 जिले

क्र.सं.	जिला	राज्य	क्षेत्रफल (वर्ग किमी.)
1.	लद्दाख	जम्मू-कश्मीर	97,776
2.	कच्छ	गुजरात	45,652
3.	लेह	जम्मू-कश्मीर	45,652
4.	जैसलमेर	राजस्थान	39,313
5.	बाडमेर	राजस्थान	28,387

- भारत का कुल क्षेत्रफल 32,87,263 वर्ग किमी है, जोकि विश्व के कुल क्षेत्रफल का 2.43% है ।
- भारत में विश्व की कुल जनसंख्या का 17.5% हिस्सा निवास करता है ।
- उत्तर से दक्षिण विस्तार 3214 किमी है और पूर्व से पश्चिम में विस्तार 2933 किमी है ।
- भारत का सबसे पूर्वी बिंदु अरुणाचल प्रदेश में वलांगु (किबिथू) है।
- सबसे पश्चिमी बिंदु गुजरात में गोरमाता सक्रिय (कच्छ जिला) में है ।
- सबसे उत्तरी बिन्दु इन्द्रा कॉल है, जो कि केन्द्र शासित प्रदेश लेह में स्थित है ।
- सबसे दक्षिणतम बिन्दु इन्दिरा पॉइंट है, इंदिरा पॉइंट को पहले पिग्मेलियन पॉइंट और पार्सन्स पॉइंट के नाम से जाना जाता था। इन्दिरा पॉइंट ग्रेट निकोबार द्वीप समूह में स्थित है। इसकी भूमध्य रेखा से दूरी 876 किमी है ।
- प्रायद्वीपीय भारत का सबसे दक्षिणी भाग तमिलनाडु में केप कोमोरिन (कन्याकुमारी) में स्थित है।
- भारत की स्थल सीमा की लम्बाई 15200 किमी है
- तटीय भाग की लम्बाई है 7516 किमी (द्वीप समूह मिलाकर)। केवल भारतीय प्रायद्वीप की तटीय सीमा 6100 किमी है ।
- इस प्रकार की कुल सीमा 15200+7516.6 = 22716.6 किमी. लम्बी है ।
- भारतीय मानक समय रेखा 82°30 पूर्वी देशांतर पर है । मानक समय रेखा 5 राज्यों से होकर गुजरती है ।
- देश का मानक समय $82\frac{1^0}{2}$ पूर्वी देशान्तर है जो नैनी (इलाहाबाद, उत्तरप्रदेश) से गुजरता है ।
  - उत्तर प्रदेश (मिर्जापुर)
  - छत्तीसगढ
  - मध्य प्रदेश
  - आंध्र प्रदेश
  - ओडिशा
- भारतीय मानक समय और ग्रीनविच समय के बीच अंतर 5.30 घण्टे का है । भारतीय समय ग्रीनविच समय से आगे चलता है ।

- सर्वाधिक राज्यों की सीमा को छूने वाला भारतीय राज्य उत्तर प्रदेश है। उत्तर प्रदेश कुल 9 राज्यों से सीमा बनाता है ।
  - उत्तराखण्ड
  - हरियाणा
  - दिल्ली
  - हिमाचल प्रदेश
  - राजस्थान
  - मध्य प्रदेश
  - छत्तीसगढ
  - झारखण्ड
  - बिहार

- भारत के कुल 9 राज्य एवं – केन्द्र शासित प्रदेश समुद्री तट से लगे हुए हैं।
  - गुजरात
  - महाराष्ट्र
  - गोवा
  - कर्नाटक
  - केरल
  - तमिलनाडु
  - आंध्र प्रदेश
  - उडीसा
  - पश्चिम बंगाल

केन्द्र शासित प्रदेश

- लक्षद्वीप
- अण्डमान निकोबार
- दमन और दीव
- पुदुच्चेरी (पांडिचेरी)

- हिमालय को छूने वाले 9 राज्य व 2 केन्द्र शासित प्रदेश हैं।

राज्य

- हिमाचल प्रदेश
- उत्तराखण्ड
- सिक्किम
- अरुणाचल प्रदेश
- नागालैंड
- मणिपुर
- मिजोरम
- त्रिपुरा
- मेघालय
- असम
- पश्चिम बंगाल

केंद्र शासित प्रदेश

- जम्मू कश्मीर
- लेह

- भारत के 8 राज्यों से होकर कर्क रेखा गुजरती है।
  - गुजरात
  - राजस्थान
  - मध्य प्रदेश
  - छत्तीसगढ
  - झारखण्ड
  - पश्चिम बंगाल
  - त्रिपुरा
  - मिजोरम

- भारत का सर्वाधिक नगरीकृत राज्य गोवा है ।
- भारत का सबसे कम नगरीकृत राज्य हिमाचल प्रदेश है ।
- भारत का मध्य प्रदेश सबसे अधिक वन वाला राज्य है ।
- भारत का हरियाणा सबसे कम वन वाला राज्य है ।
- भारत का मासिनराम (मेघालय) में सबसे अधिक वर्षा होती है ।
- भारत के केन्द्र शासित प्रदेश लेह में सबसे कम वर्षा होती है ।
- अरावली पर्वत सबसे प्राचीन पर्वत श्रृंखला है ।
- हिमालय पर्वत सबसे नवीन पर्वत श्रृंखला है ।

भारत की अंतर्राष्ट्रीय सीमाएं एवं पडोसी देश

- भारत की कुल 15200 किमी सीमा रेखा 92 जिलों और 17 राज्यों से होकर गुजरती है ।
- भारत की तटीय सीमा 7516 किमी है जोकि 9 राज्यों और 4 केन्द्र शासित प्रदेशों को स्पर्श करती है। केवल प्रायद्वीप भारत की तटीय सीमा रेखा 6100 किमी है ।
- भारत के मात्र 5 राज्य ऐसे हैं जो किसी भी अंतर्राष्ट्रीय सीमा रेखा और तट रेखा को स्पर्श नहीं करते हैं –
  - हरियाणा
  - मध्य प्रदेश
  - झारखण्ड
  - छत्तीसगढ
  - तेलंगाना

- भारतीय राज्यों में गुजरात की तट रेखा सर्वाधिक लंबी है। इसके बाद आंध्र प्रदेश की तट रेखा है ।
- भारत की सबसे छोटी तटरेखा गोवा राज्य की है ।
- त्रिपुरा तीन तरफ से बांग्लादेश से घिरा राज्य है ।

- भारत के 7 पडोसी देश भारत की थल सीमा को स्पर्श करते है –
  - पाकिस्तान – 3323 किमी
  - चीन – 3488 किमी
  - नेपाल – 1751 किमी
  - बांग्लादेश – 4096.7 किमी
  - भूटान – 699 किमी
  - म्यांमार – 1643 किमी
  - अफगानिस्तान – 106 किमी

- भारत की सबसे लंबी अंतर्राष्ट्रीय सीमा बांग्लादेश के साथ लगती है ।
- भारत सबसे छोटी अंतर्राष्ट्रीय सीमा रेखा अफगानिस्तान के साथ साझा करता है जोकि केवल 80 किमी है ।
- भारत के 2 पडोसी देश जो भारत की तटीय सीमा के साथ जुडे हुए है।
  1. श्रीलंका
  2. मालद्वीप
- ऐसे देश जो थल एवं जल दोनों सीमा बनाते है।
  - पाकिस्तान
  - बांग्लादेश
  - म्यांमार
- पाकिस्तान के साथ भारत के 3 राज्य एवं 2 केन्द्र शासित प्रदेश सीमा साझा करते है –

राज्य
1. पंजाब
2. राजस्थान
3. गुजरात

केन्द्र शासित प्रदेश
1. जम्मू कश्मीर
2. लेह

- चीन के साथ भारत के 4 राज्य एवं 2 केन्द्र शासित प्रदेश सीमा साझा करते है –

राज्य
1. हिमाचल प्रदेश
2. उत्तराखण्ड
3. सिक्किम
4. अरुणाचल प्रदेश

केन्द्र शासित प्रदेश
1. जम्मू कश्मीर
2. लेह

- नेपाल के साथ भारत के 5 राज्य सीमा साझा करते है –
  1. उत्तराखण्ड
  2. उत्तर प्रदेश
  3. बिहार
  4. सिक्किम
  5. पश्चिम बंगाल

- भूटान के साथ भारत के 4 राज्य सीमा साझा करते है
  1. पश्चिम बंगाल
  2. सिक्किम
  3. अरुणाचल प्रदेश
  4. असम

- म्यांमार के साथ भारत के 4 राज्य सीमा साझा करते है –
  1. अरुणाचल प्रदेश
  2. नागालैण्ड
  3. मणिपुर
  4. मिजोरम

अफगानिस्तान के साथ भारत का एक केन्द्र शासित प्रदेश सीमा बनाता है – (केवल 80 किमी POK)
  - लद्दाख
- पाक जलडमरूमध्य और मन्नार की खाडी श्रीलंका को भारत से अलग करती है। पाक जलमडरूमध्य को पाक जल संधि के नाम से भी जाना जाता है।
- मेकमोहन रेखा भारत और चीन के बीच में स्थित है । यह रेखा 1914 में शिमला समझौते में निर्धारित की गयी थी ।
- डूरण्ड रेखा 1893 में सर डूरण्ड द्वारा भारत और अफगानिस्तान के बीच में डूरण्ड रेखा स्थापित की गई थी। परन्तु यह रेखा अब अफगानिस्तान एवं पाकिस्तान के मध्य है ।
- भारत और पाकिस्तान के बीच रेडक्लिफ रेखा है। रेडक्लिफ रेखा का निर्धारण 17 अगस्त, 1947 को सर सिरिल रैडक्लिफ की अध्यक्षता में सीमा आयोग द्वारा किया गया था ।

सीमावर्ती सागर :-
- सीमावर्ती सागर क्षेत्र आधार रेखा से 12nm तक स्थित है ।
- क्षेत्र में भारत का एकाधिकार है ।

1. संलग्न सागर :-

- संलग्न सागर क्षेत्र आधार रेखा से 24nm तक स्थित है ।
- इस क्षेत्र में भारत के पास वित्तीय अधिकार है ।

2. अनन्य आर्थिक क्षेत्र :-

- अनन्य आर्थिक क्षेत्र आधार रेखा से 200**nm** तक स्थित है ।
- इस क्षेत्र में भारत के पास आर्थिक अधिकार है तथा यहाँ भारत संसाधनों का दोहन, द्वीप निर्माण तथा अनुसंधान आदि कर सकता है ।
- उच्च सागर यहाँ सभी देशों का समान अधिकार होता है ।

भारत में विदेशी क्षेत्रों का समावेश

15 अगस्त 1947 को स्वतंत्रता के बाद फ्रांस एवं पुर्तगाल के अधीन कई क्षेत्रों का भारत में विलय हुआ है जो निम्न प्रकार से है ।

पुर्तगाल के अधीन

क्र.सं.	क्षेत्र	दूरी (वर्ग किमी.)
1.	दादर एवं नगर हवेली	491
2.	दमन एवं दीव	112
3.	गोवा	3702

फ्रांस के अधीन

क्र.सं.	क्षेत्र	दूरी (वर्ग किमी.)
1.	चन्देरनगर	19
2.	पाण्डिचेरी	319
3.	कराईकला	160
4.	माहे	155
5.	यानम	30

भारत के भौगोलिक भू-भाग

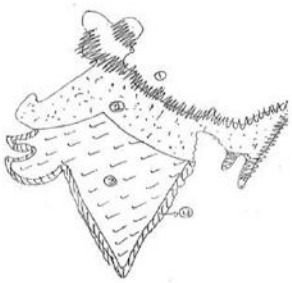

भारत के भौगोलिक भू-भाग:-
1. हिमालयी पर्वतीय क्षेत्र
2. उत्तरी मैदान क्षेत्र
3. प्रायद्वीप पठार क्षेत्र
4. तटीय मैदान क्षेत्र
5. द्वीप समूह क्षेत्र

1. हिमालय पर्वतीय प्रदेश :-

- हिमालय का विस्तार भारत के उत्तर से उत्तर-पश्चिम (सिन्धु) से दक्षिण-पूर्व (ब्रह्मपुत्र) तक की ओर है । पूर्व-पश्चिम दिशा में इसकी लम्बाई 2400 किमी. है । इसकी चौडाई कश्मीर में 400 किमी. तथा अरूणाचल में 150 किमी. है ।
- प्लेट विवर्तनी सिद्धान्त के अनुसार इंडियन एवं यूरेशियन प्लेटों के टकराव से हिमालय का निर्माण हुआ है ।
- इंडियन प्लेट टकराव से हिमालय का निर्माण हुआ है ।
- इंडियन प्लेट प्रतिवर्ष 5 सेमी. कि दर यूरेशियम प्लेट से टकरा रही है । इसके कारण इस पर्वत की ऊँचाई प्रतिवर्ष 5 सेमी. की दर से बढ रही है ।
- यह पर्वत तंत्र विश्व का सबसे ऊँचा पर्वत तंत्र है, इसलिए इस तंत्र में बहुत से अल्पाइन हिमनद भी पाये जाते है ।
- इस पर्वतीय प्रदेश को तीन भागों में विभाजित किया जा सकता है:-

A. हिमालय :-

हिमालय पर्वतीय प्रदेश का सबसे उत्तरी भाग ट्रांस हिमालय कहलाता है ।

- यह मुख्य रूप से 'जम्मू-कश्मीर' व 'तिब्बत' में स्थित है ।
- इस भाग में तीन प्रमुख पर्वत श्रेणियाँ पाई जाती है:-
  (a) काराकोरम श्रेणी:-
  (b) लद्दाख श्रेणी:-
  (c) जास्कर श्रेणी:-

(A) काराकोरम श्रेणी :-

- ट्रांस हिमालय की सबसे उत्तरी श्रेणी कराकोरम में स्थित है ।
- ट्रांस हिमालय की सबसे लम्बी व ऊँची श्रेणी है ।
- ट्रांस हिमालय में पंजाब संकीर्ण से उत्तर में क्रमशः कैलाश जास्पर लद्दाख एवं कराकोरम श्रेणी स्थित है ।
- साकापोशी (लद्दाख – श्रृंखला का सर्वोच्च शिखर) विश्व कि सबसे बडी ढाल वाली चोटी है ।
- हिन्ज लाइन या शुचर जोन हाउस एवं वृहत् हिमालय को अलग करती है ।
- स्वेन हैडन ने कराकोरम श्रेणी को उच्च एशिया कि रीढ कहा है ।
- 'माउण्ट गोडविन ऑस्टिन' इस श्रेणी की सबसे ऊँची चोटी है, जो कि भारत की सबसे ऊँची तथा विश्व की दूसरी सबसे ऊँची चोटी है । (8611 किमी.)
  1. बतुरा
  2. हिस्पार
  3. बियाको
  4. बालतोरो
  5. सियाचिन

(B) लद्दाख श्रेणी

- काराकोरम श्रेणी के दक्षिण में स्थित।
- तिब्बत में इस श्रेणी का विस्तार 'कैलाश पर्वत' के नाम से जाना जाता है ।

(C) जास्कर श्रेणी:-

- ट्रांस हिमालय की सबसे दक्षिणी श्रेणी ।
- जास्कर तथा लद्दाख श्रेणी के मध्य सिन्धु घाटी स्थित है ।
- वृष्टि छाया क्षेत्र में स्थित होने के कारण इस पठार पर शुष्क परिस्थितियाँ पाई जाती है, इसलिए
  यह एक 'ठण्डे मरूस्थल' का उदाहरण है ।

B. मुख्य हिमालय:-

- यह पर्वतीय प्रदेश का दूसरा प्रमुख भाग है ।
- यह भाग सिन्धु नदी घाटी से ब्रह्मपुत्र नदी घाटी तक स्थित है ।
- यह लगभग 2500 किमी. की दूरी में विस्तृत है ।
- इस श्रेणी में विश्व की सबसे ऊँची चोटी माउण्ट एवरेस्ट (8848 मी.) स्थित है ।
- माउण्ट एवरेस्ट नेपाल–चीन सीमा पर स्थित है ।
- इसे नेपाल में सागरमाथा कहते है । (माउण्ट एवरेस्ट को)
- जोजिला दर्रे का निर्माण सिंधु नदी द्वारा शिपकीला का निर्माण सतलज नदी के द्वारा एवं डैलोजा का निर्माण तिस्ता नदी द्वारा हुआ है ।
- बुर्जिन दर्रा डीनगर से गीलगित को एवं शिपकीला दर्रा शिमला को तिब्बत से जोडता है ।
- इस पर्वत पर बहुत से प्रमुख हिमनद स्थित है ।
  e.g.- गंगोत्री, यमुनोत्री, सतोपंथ, पिंडारी, मिलान

(a). मध्य हिमालय **(Middle Himalaya):-**

- इसे हिमाचल हिमालय या लघु हिमालय भी कहते है
- यह श्रेणी 2400 किमी. की दूरी में विस्तरत है ।
- इसकी औसत चौडाई 80 से 100 किमी. है ।
- मध्य हिमालय तथा वृहत हिमालय के बीच बहुत सी घाटियाँ स्थित है:-
  - कश्मीर घाटी = वृहत हिमालय – पीर पंजाल
  - कुल्लू घाटी = वृहत हिमालय – धौलाधर
  - कांगडा घाटी (HP) = वृहत हिमालय – मसूरी
  - काठमांडू घाटी = वृहत हिमालय – महाभारत
- इस श्रेणी पर ग्रीष्म ऋतु में शीतोष्ण कटिबन्धीय घास के मैदान पाए जाते है जिन्हें जम्मू कश्मीर में 'मर्ग' तथा उत्तराखण्ड मे 'बुग्याल, पयाला' कहा जाता है ।
- इस श्रेणी क्षेत्र में बहुत से पर्यटन स्थल पाए जाते है e.g. कुल्लू, नंदा देवी, मनाली, नैनीताल, मसूरी etc.
- इस श्रेणी में कुछ प्रमुख दर्रे पाए जाते है :-
  1. पीरपंजाल दर्रा :- यह दर्रा श्रीनगर को POK से जोडता है। इसका विस्तार पंजाब के पोतवार बेसिन से कोसी नदी तक है ।

नदी घाटी के आधार पर हिमालय

सीडनी के बुरार्ड नामक भू-वैज्ञानिक ने हिमालय को चार भागों में वर्गीकृत किया है ।

क्र.सं.	हिमालय	नदी का विस्तार	दूरी (किमी.में)	पर्वत श्रेणियाँ
1.	पंजाब हिमालय	सिंधु से सतलज	560	जास्पर, लद्दाख, त्रिशूल, पिरपंजाल
2.	कुमाऊ हिमालय	सतलज से काली	320	बद्रीनाथ, त्रिशूल, नंदा
3.	नेपाल हिमालय	काली से तिस्ता	800	अन्नपूर्णा, धौलागिरी
4.	असम हिमालय	तिस्ता से दिहांग	720	कुलागागडी, जांग, मगना

  2. बनिहाल दर्रा:- श्रीनगर को जम्मू से जोडता है, NH-1A इस दर्रे से गुजरता है । इस दर्रे में जवाहर सुरंग स्थित है ।

- शिवालिक श्रेणी की ऊँचाई 900–1200 मी. के बीच पाई जाती है ।
- थार के रेगिस्तान में पाए जाने वाली बालू के स्थानान्तरित टीलों को स्थानीय भाषा में धोरा कहा जाता है ।
- इसकी चौडाई 10–50 किमी. है ।
- शिवालिक को विभिन्न स्थानीय नामों से जाना जाता है:–
  - जम्मू और कश्मीर – जम्मू हिल्स
  - उत्तराखंड – दूदवा/धांग
  - नेपाल – चूडियाघाट
  - दाफ्ला
  - मिरी
  - अबोर
  - मश्मी
- इन घाटियों को पश्चिमी हिमालय क्षेत्र में 'दून' तथा पूर्वी हिमालय क्षेत्र में 'द्वार' कहते हैं ।
  e.g.- देहरादून, कोटलीदून, पाटलीदून, हरिद्वार, निहांगद्वार **etc.**

चोस (Chos):–

- हिमाचल प्रदेश तथा पंजाब में स्थित शिवालिक श्रेणी क्षेत्र में मानसून के दौरान अस्थायी धाराओं का निर्माण होता है, जिन्हें । स्थानीय भाषा में चोस कहते हैं ।
- यह धाराएँ शिवालिक को विभिन्न भागों में विभाजित कर देती है ।

C. पूर्वांचल **(Purvanchal):-**

- उत्तर-पूर्वी राज्यों में उत्तर से दक्षिण की ओर विस्तृत पहाडियों को पूर्वांचल कहते हैं ।
- पूर्वांचल का निर्माण इण्डो-ऑस्ट्रेलियन तथा बर्मा प्लेट के अभिसरण से हुआ है ॥
- यह बालू पत्थर से निर्मित पहाडियाँ है ।
- दक्षिण-पश्चिम मानसून पवनों द्वारा यहाँ भारी वर्षा प्राप्त होती है अतः यहाँ बहुत अधिक जैव-विविधता पाई जाती है ।
- यह विश्व के 36 Hotspots में सम्मिलित है ।
- नागा पहाडियों की सबसे ऊँची चोटी सरामती है ।
- मिजो पहाडियों को लुसाई पहाडियाँ भी कहते है
- मिजो पहाडियों की सबसे ऊँची चोटी ब्लू माउण्टेन है
- बराइल श्रेणी नागा पहाडियों एवं मणिपुर पहाडियों को अलग करती है ।

हिमालय पर्वतीय प्रदेश का प्रादेशिक विभाजन

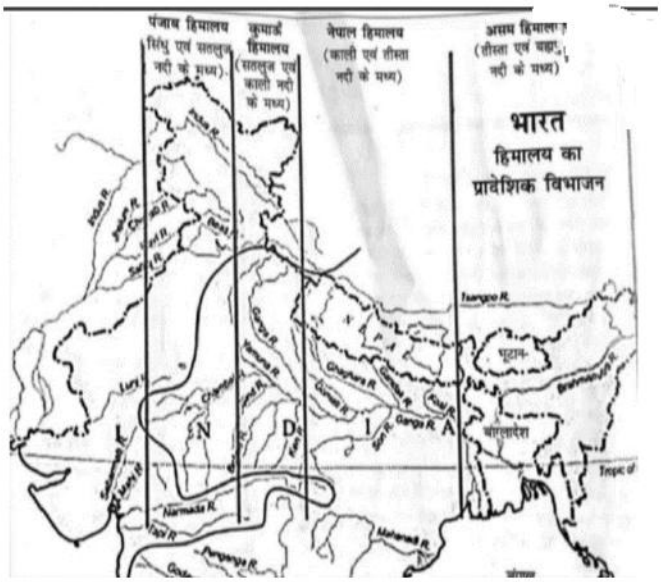

(a). कश्मीर/पंजाब हिमालय **(Kashmir/Punjab Himalaya):-**

- कश्मीर/पंजाब हिमालय का यह भाग सिंधु तथा सतलज नदी के बीच स्थित है ।
- यह लगभग 560 किमी. की दूरी में विस्तृत है ।
- इस भाग में जास्कर, पीरपंजाल श्रेणी एवं जम्मू पहाडियाँ स्थित है ।

(b). कुमायूँ हिमालय **(Kumao Himalaya):-**

- हिमालय का यह भाग सतलज से काली नदी के बीच स्थित है ।
- यह 320 किमी. की दूरी में विस्तृत है ।
- यह भाग मुख्य रूप से उत्तराखण्ड में स्थित है ।

(c). नेपाल हिमालय **(Nepal Himalaya):-**

- यह भाग काली तथा तिस्ता नदी के बीच स्थित है ।
- यह भाग 800 किमी. की दूरी में विस्तृत है ।
- सिक्किम व दार्जीलिंग इसी के अंतर्गत है ।

(d). असम हिमालय **(Assam Himalaya):-**

- यह भाग तिस्ता से दिवांग नदी के बीच स्थित है
- यह 750 किमी. की दूरी में विस्तृत है ।
- यहाँ हिमालय की चौडाई सबसे कम हो जाती है जो लगभग 150 किमी. हो जाती है ।

2. भारत के मैदान

नदियों द्वारा लाये गये अवसादों के कारण मैदानों का निर्माण होता है ।

भारत के मैदानों को तीन भागों में बाँटा जा सकता है ।

1. पूर्वी घाट के मैदान
2. पश्चिमी घाट के मैदान
3. उत्तर भारत का मैदान

1. पूर्वी घाट के मैदान

- आकार में ये उत्तर भारत के मैदान से छोटा तथा पश्चिमी घाट के मैदान से बडा है।
- गोदावरी, कृष्णा एवं कावेरी नदी के पास मैदानों की चौडाई अधिक है।
- इसके चौडाई उत्तर से दक्षिण की तरफ बढती है। औसत चौडाई 100 कि.मी. से 130 कि.मी. तक है।
- पश्चिम बंगाल की हुगली नदी से लेकर तमिलनाडु तक फैला हुआ है।
- उडीसा से आन्ध्र प्रदेश की तरफ का मैदान उत्कल तट कहलाता है।
- आन्ध्र प्रदेश का तट कलिंग तट कहलाता है। इसी तट को उत्तरी सरकार तट के नाम से भी जाना जाता है।
- आन्ध्र प्रदेश से लेकर तमिलनाड तक के मैदान को कोरामण्डल तट कहा जाता है।
- भारत की कई प्रमुख नदियों के डेल्टा इसी मैदान में बनते है। इन नदियों में मुख्य नदियां अधोलिखित है ।
  - महानदी
  - गोदावरी
  - कृष्णा
  - कावेरी

2. पश्चिमी घाट के मैदान

- दमन से लेकर कन्याकुमारी तक फैला हआ है ।
- पंजाब, हरियाणा के मैदानी भाग में स्थित बाढ के मैदानों को बेटस कहा जाता है ।
- आकार में पूर्वी तथा उत्तर भारत के मैदानों से छोटा है। इसकी औसत चौडाई 50 कि.मी. है।
- गुजरात से गोवा तक के तट को कोंकण तट कहा जाता है। इसमें महाराष्ट्र का पूरा तट आ जाता है।
- गोवा से मंगलौर तक के तट को कन्नड तट कहा जाता है।
- कर्नाटक से केरल तक के तट को मालाबार तट कहा जाता है।
- इसकी चौडाई कम होने के कारण यहां पर ढाल अधिक है। जिस कारण से यहां पर नदियों में तीव्र चाल से चलती है और झरने बनाती है।
- नदियों में गति अधिक होने के कारण नदियां डेल्टा नहीं बना पाती है।
- मछली पालन के लिए आदर्श स्थिति बनती है।

3. उत्तरी भारत का विशाल मैदान

- भारत के सभी मैदानों में से ये सबसे विशाल है। इसकी औसत चौडाई 240 कि.मी. से 320 कि.मी. है।
- इस मैदान की समुद्र तल से ऊँचाई कम होने के कारण यहां पर नदियों की गति काफी धीमी हो जाती है। अतः नदियां अपने साथ लाये हुए
- अवसाद को यहां जमा कर देती है, जोकि इस मैदान की विशालता का प्रमुख कारण है।
- इसको समझने के लिए 4 भागों में बाँटा गया है

भाबर प्रदेश

- शिवालिक हिमालय से 12 कि.मी. तक के क्षेत्र जिसमें कंकड पत्थर अधिक होते है को भाबर प्रदेश कहा जाता है।
- भावर प्रदेश की लुप्त नदियाँ यहाँ पुनः सतह पर आ जाती है ।
- शिवालिक हिमालय के बाद नदियों की गति कम हो जाती है। इसलिए वो अपने साथ लाये अवसाद को यहां जमा कर देती है।
- यहां आकर नदियां विलुप्त हो जाती है। ये नदियां फिर आगे जाकर वापस धरती पर प्रकट हो जाती है।

तराई प्रदेश

- भाबर के नीचे वाले दलदली क्षेत्र को तराई क्षेत्र कहा जाता है।
- यहां पर जंगल में अजगर, मगरमच्छ आदि के साथ अन्य वन्य जीव भी पाये जाते है, अतः कोई जनजाति नहीं रहती।
- वर्तमान में तराई की अधिकांश भूमि को कृषि योग्य बना लिया गया है।

बांगर प्रदेश

- नदी के दूर वाला क्षेत्र जो नदी द्वारा लाई गई मिट्टी से पाटा गया है, बांगर प्रदेश कहलाता है।
- ये प्रदेश मैदान के ऊँचाई वाले क्षेत्र होते है।
- इस प्रदेश में बाढ नहीं आती है। जिस कारण यहां की मिट्टी का नवीकरण नहीं हो पाता है।
- इस प्रदेश में पुरानी जलोढ मृदा पायी जाती है।
- गंगा-यमुना दो आब के ऊपरी भाग में यह भूड निक्षेपों के रूप में मिलता है ।

खादर प्रदेश

- नदी के पास वाला क्षेत्र जहां पर बाड आती रहती है, खादर क्षेत्र कहलाता है। लगभग हर वर्ष बाड आने के कारण यहां की मृदा का नवीकरण होता रहता है। इसी कारण ये प्रदेश उपजाऊ बना रहता है ।
- इसकी ऊँचाई बांगर प्रदेश से कम होती है।
- इसका निर्माण नई जलोढ मृदा से हुआ है ।

डेल्टा

- डेल्टाई मैदान मुख्यतः किचड तथा दलदली युक्त होता है । इसमें उच्च भूमियाँ चार तथा दलदली भूमियाँ बील कहलाती है ।

भारत के पठार

भारत के पठार गोंडवाना लैण्ड के भाग है । इसकी आकृति त्रिभुजाकार है । यह राजस्थान से कन्याकुमारी तक (1700 किमी.) तथा गुजरात से पश्चिम बंगाल (1400 किमी.) तक 16 लाख वर्ग किमी. तक विस्तृत है ।

मालवा का पठार

तीन राज्यों में फैला हुआ है ।

यह मध्यप्रदेश से गुजरात, राजस्थान, छत्तीसगढ राज्य में स्थित है । यह ज्वालामुखी की चट्टानों से बना है । इसमें चंबल, बेतवा नदी निकलती है । इसकी सीमाओं का निर्धारण उत्तर में अरावली, दक्षिण में विन्ध्याचल पर्वत एवं पूर्व में बुन्देलखण्ड द्वारा होता है । इस पठार के उत्तर में चम्बल नदी अवनालिका अपरदन करती है ।

- गुजरात
- मध्य प्रदेश
- राजस्थान
- निर्माण ग्रेनाइट से हुआ है।
- काली मिट्टी से ढका हुआ है।
- ऊँचाई 500-610 मी0 है।
- इसे लावा निर्मित पठार भी कहा जाता है।
- इसमें कुछ लावा द्वारा बनी पहाडियां भी है।
- यमुना की सहायक चंबल नदी ने इसके मध्य भाग को प्रभावित किया है।
- पश्चिमी भाग को माही नदी ने प्रभावित किया है। माही नदी अरब सागर में जाकर गिरती है।
- पूर्वी भाग को बेतवा नदी ने प्रभावित किया है।
- मालवा का पठार अरावली पर्वत व विन्ध्यांचल पर्वत के बीच में है।

बुन्देलखण्ड का पठार

- मालवा पठार के उत्तरी भाग को बुन्देलखण्ड एवं उत्तरी-पूर्वी भाग को बघेलखण्ड कहा जाता है । बुन्देलखण्ड पठार मिस कि चट्टानों से निर्मित है ।
- उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश के बीच में फैला हुआ है ।
- इसके निर्माण में नीस और ग्रेनाइट से हुआ है।
- इसका ढाल दक्षिण से उत्तर और उत्तर पूर्व की तरफ है ।
- यहां कम गुणवत्ता का लौह अयस्क प्राप्त होता है ।

छोटा नागपुर का पठार

- इस पठार की प्रमुख नदियाँ, महानदी, स्वर्ण रेखा, सोन, दामोदर है ।
- इस पठार में मुख्य खनिज - लोहा, मोजका, अभ्रक, तांबा, यूरेनियम एवं टंगस्टन आदि है ।
- छोटा नागपुर के पठार का महाराष्ट्र के नागपुर जिले से कोई सम्बन्ध नहीं है । इसका नाम पुराने राजा के नाम पर पडा है।
- ये पठार झारखंड में फैला हुआ है।
- इसका क्षेत्रफल 65000 वर्ग कि0मी0 है।
- रांची का पठार, हजारी बाग का पठार, कोडरमा का पठार सब इसी के अंदर आते है।
- इस पठार की औसत ऊँचाई 700 मी0 है।
- भारत का रूर भी कहा जाता है ।

शिलांग का पठार

- यह पठार भारत का बहिर्शायी है । यह भ्रंशन के कारण भारतीय प्रायद्वीप से माल्दा गैप द्वारा पृथक कि गई है ।
- शिलांग शिखर की ऊँचाई 1961 मी. है ।
- गोरा, खासी और जयन्ती पहाडियां इसी के अंदर आती है।
- इस पठार में कोयला और लौह अयस्क, और चूना पत्थर के भंडार उपलब्ध है।

दक्कन का पठार

- पूर्वी तथा पश्चिमी घाटों, सतपुडा, मैकाले तथा राजमहल कि पहाडियों के बिच 7 लाख वर्ग किमी. क्षेत्र में विस्तृत है ।

- भारत का विशालतम पठार है।
- दक्षिण के आठ राज्यों में फैला हुआ है।
- इस पठार का आकार त्रिभुजाकार है। सतपुडा और विंध्याचल श्रृंखला इसकी उत्तरी सीमा है तथा पूर्व और पश्चिम में पूर्वी तथा पश्चिमी घाट स्थित है।
- इसकी औसत ऊँचाई 600 मी0 है।
- इस पठार को पुनः तीन भागों में बाँटा जाता है।
  - महाराष्ट्र का पठार- इसमें काली मृदा की आर्कियन पायी जाती है।
  - आंध्रप्रदेश का पठार- इसे पुनः दो भागों में विभक्त किया गया है।
  - तेलंगाना का पठार- इस पठार के लावा द्वारा निर्मित होने के कारण इसे लावा पठार के नाम से भी जाना जाता है।
  - रायलसीमा का पठार- इसमें आर्कियन चट्टानों की अधिकता पायी जाती है।
  - कर्नाटक का पठार- इसमें धात्विक खनिज तथा आर्कियन चट्टानों की अधिकता पायी जाती है।

1. द्वीपीय समूह प्रदेश

- भारत के दक्षिण तट के नजदीक अण्डमान-निकोबार तथा लक्षद्वीप द्वीप समूह पाये जाते है, जो कि मिलकर द्वीपीय समूह प्रदेश का निर्माण करते है ।
- भारत के पास कुल 1208 द्वीप समूह है। ये संख्या सभी छोटे-छोटे द्वीपों को मिलाकर है।
- अंडमान निकोबार द्वीप समूह सबसे बडा द्वीप समूह है।
- लक्षद्वीप सबसे छोटा द्वीप समूह है।

(a). अण्डमान-निकोबार द्वीप समूह :- अण्डमान

- बंगाल की खाडी में स्थित 572 द्वीपों का समूह ।
- इन द्वीपों को अराकन योमा पर्वत श्रेणी का विस्तार ही माना जाता है ।

निकोबार

- 10° चैनल अण्डमान को निकोबार द्वीप समूह से अलग करता है ।
- 'मध्य अण्डमान द्वीप' अण्डमान-निकोबार का सबसे बडा द्वीप है ।
- अण्डमान-निकोबार की राजधानी 'पोर्टब्लेयर' दक्षिण अण्डमान द्वीप में स्थित है ।
- अण्डमान-निकोबार की सबसे ऊँची चोटी 'सैडल चोटी' उत्तरी अण्डमान द्वीप पर स्थित है ।
- 'डंकन पेरौज' दक्षिण अण्डमान को लघु अण्डमान से अलग करता है ।
- 'बैरन द्वीप' जो कि भारत का एकमात्र सक्रिय ज्वालामुखी द्वीप है । जो अंडमान में स्थित है ।
- 'नारकोण्डम द्वीप' जो कि भारत का एकमात्र सुषुप्त ज्वालामुखी द्वीप है ।
- 'ग्रेट निकोबार' निकोबार द्वीप समूह का सबसे बडा द्वीप है तथा 'इन्दिरा प्वाइंट' इसी द्वीप का दक्षिणतम बिन्दु है ।

निकोबार द्वीप समूह

लिटिल अंडमान के नीचे "10° चौनल" पडता है और उसके बाद निकोबार द्वीप समूह शुरू हो जाता है

- निकोबार द्वीप समूह तीन भागो में बटा है।
  - कार निकोबार
  - लिटिल निकोबार (बीच में)
  - ग्रेटनिकोबार
- निकोबार द्वीप समूह का सबसे दक्षिणी बिन्दू जोकि भारत का भी दक्षिणी बिन्दू है ग्रेट निकोबार पर पडता है । इसे "इन्द्रा प्वाइंट" "पिग मेलियन प्वाइंट" के नाम से जाना जाता है ।

(b). लक्षद्वीप

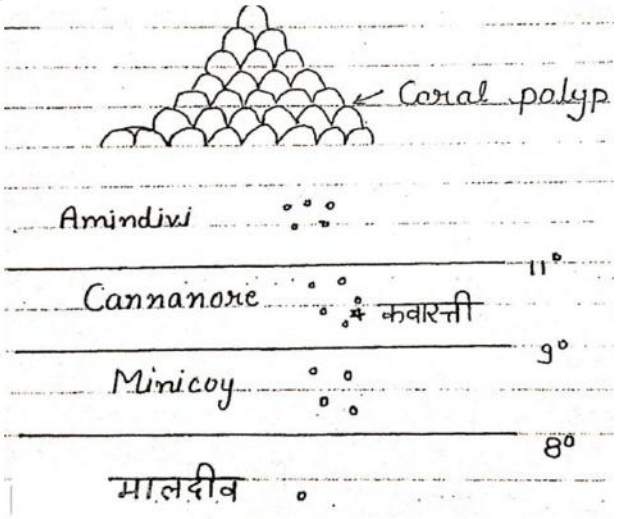

भारत के अपतटीय द्वीप

भारत में लगभग 1382 अपतटीय द्वीप है ।

(1) पश्चिमी द्वीप - (i) पीरम, भैंसला - काठीयावाड
(ii) खडिया बैट, नर्मदा, ताप्ती के मुहाने पर
(iii) एलीफैण्टा, बुचर-महानदी के मुहाने पर

- 'अरब सागर' में स्थित 36 द्वीपों का समूह ।
- यह कोरल द्वीपों का उदाहरण है ।
- लक्षद्वीप को तीन भागों में विभाजित किया जा सकता है-

पारिस्थितिकी तंत्र

- सजीवों का इसके जैविक एवं अजैविक वातावरण के होने वाला पारस्परिक संबंध का अध्ययन – Ecology कहलाता है।

Ecology
- Oikos → Place to live
- Logos → to study

सजीवों के रहने के स्थान का अध्ययन

- इकोलोजी :– शब्द – अर्नेस्ट हेकल
  - जनक – रीटर
  - दूसरा नाम – बायो नॉमिक्स (Bionomics)
  - भारतीय ईकोलॉजी के जनक – रामदेव मिश्रा

ईकोलॉजी
- स्वपारिस्थितिकी (Autecology) – एक जीव (प्रजाति) का वातावरण के साथ संबंधों का अध्ययन
- समपारिस्थितिकी (Synecology) – सम्पूर्ण जैविक समुदाय का वातावरण के साथ संबंधों का अध्ययन

<u>संगठन के विभिन्न प्रकार :-</u>

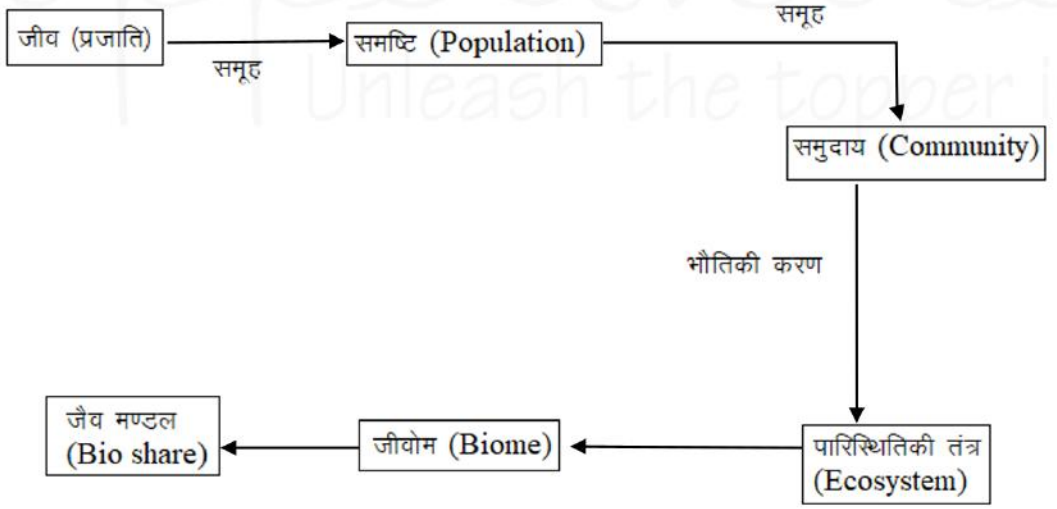

- <u>पारिस्थितिक तंत्र (Ecosystem) :-</u>

शब्द – Sir A.G. Tansley (ए.जी. टेन्सले 1935)

A.G. Tansley के अनुसार वातावरण के जैविक व अजैविक कारकों के सम्कलन के परिमाणस्वरूप निर्मित तंत्र 'ईकोसिस्टम' कहलाता है।

- पर्यावरण की ईकाई कहा – ई.पी. ओडम (जनक ईकोसिस्टम के)
- सबसे छोटा ईकोसिस्टम – पानी की बूंद

- सबसे बड़ा व स्थाई ईकोसिस्टम – महासागर (Ocean)
- इसके दो घटक होते है।

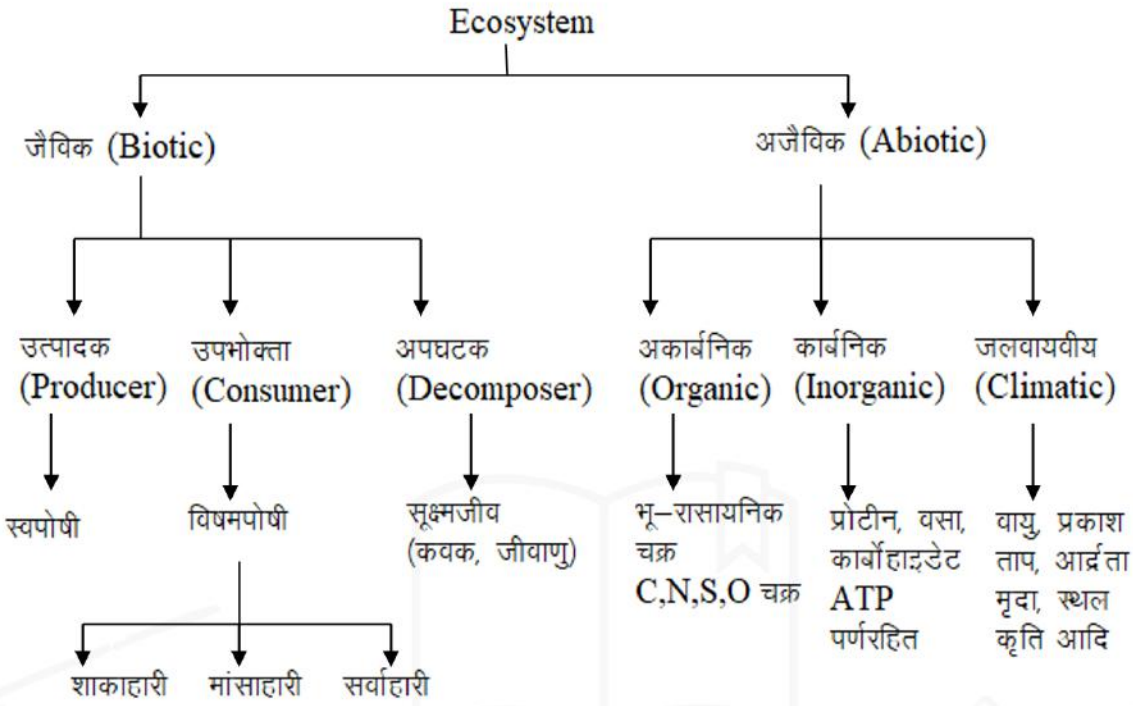

जैविक अवयव –

- पर्यावरण के घटक जो सजीव होते है।
- उत्पादक, उपभोक्ता व अपघटक में विभाजित।

उत्पादक –

- इन्हें परिवर्तक, पारक्रमी स्वपोषी भी कहते है।
- ये क्लोरोफिल युक्त पादप है। शैवाल, घास एवं पेड़ आदि।
- प्रकाश संश्लेषण के द्वारा सौर ऊर्जा का रासायनिक ऊर्जा में परिवर्तित कर अपना भोजन स्वयं बनाते है।
- स्वपोषी पादप भी कहते है।
  जैसे – जल तंत्र – शैवाल, जलीय पादप
  स्थल तंत्र – हरे पादप व घास

उपभोक्ता :– प्रकृति में वे जीव जो पादपों तथा अन्य जीवों से पोषण प्रापत करते है, उपभोक्ता कहलाते है।

- सभी जन्तु उपभोक्ता की शैली में होते है।
- ये विषमपोषी होते है जिनमें शाकाहारी, मांसाहारी एवं सर्वाहारी प्रकार के जन्तु होते है।

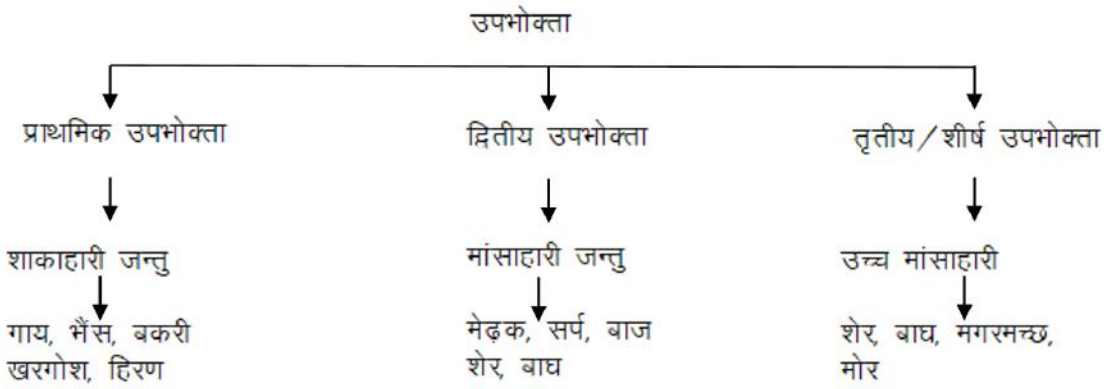

उपभोक्ता

- प्राथमिक उपभोक्ता
  - शाकाहारी जन्तु
    - गाय, भैंस, बकरी खरगोश, हिरण
- द्वितीय उपभोक्ता
  - मांसाहारी जन्तु
    - मेढ़क, सर्प, बाज शेर, बाघ
- तृतीय / शीर्ष उपभोक्ता
  - उच्च मांसाहारी
    - शेर, बाघ, मगरमच्छ, मोर

अपघटक :– प्रकृति में वे सूक्ष्म जीव जो उत्पादक व उपभोक्ता का अपघटक करते है।
जीवाणु :– जन्तु ऊतकों एवं कवक पादप ऊतकों की अपघटन करते है।

अजैविक घटक :– इसमें कार्बनिक, अकार्बनिक एवं जलवायवीय कारक आते है जैसे – जल, पानी, मृदा एवं सूर्य का प्रकाश आदि।

- अकार्बनिक पदार्थ :– इसमें पोषक तत्व एवं यौगिक आते है। जैसे :– कार्बन, ऑक्सीजन, नाइट्रोजन, सल्फर, फॉस्फोरस, CO_2 एवं जल आदि।
  भू–रासायनिक चक्र में इनका चक्रण होता रहता है।
- कार्बनिक यौगिक :– इनमें वसा, प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट एवं ह्यूमसी पदार्थ सम्मिलित है।
  ये जैविक व अजैविक यौगिकों को जोडते है।
- जलवायवीय कारक :– इसमें जल, वायु, प्रकाश, वर्षा, आर्द्रता मृदा एवं स्थलाकृतियों आदि को सम्मिलित किया गया है।
  - ➢ ये कारक सजीवों के वितरण संख्या उपापचय एवं व्यवहार को प्रभावित करता है।
  - ➢ स्थलाकृति में ढ़लान की मात्रा, पर्वतों की ऊँचाई, दिशा शामिल है।

Note :-

- किसी क्षेत्र विशेष में समस्त जन्तु प्रजातियों को फोना कहते है।
- किसी क्षेत्र में समस्त पादप प्रजातियों को फ्लौरा कहते है।

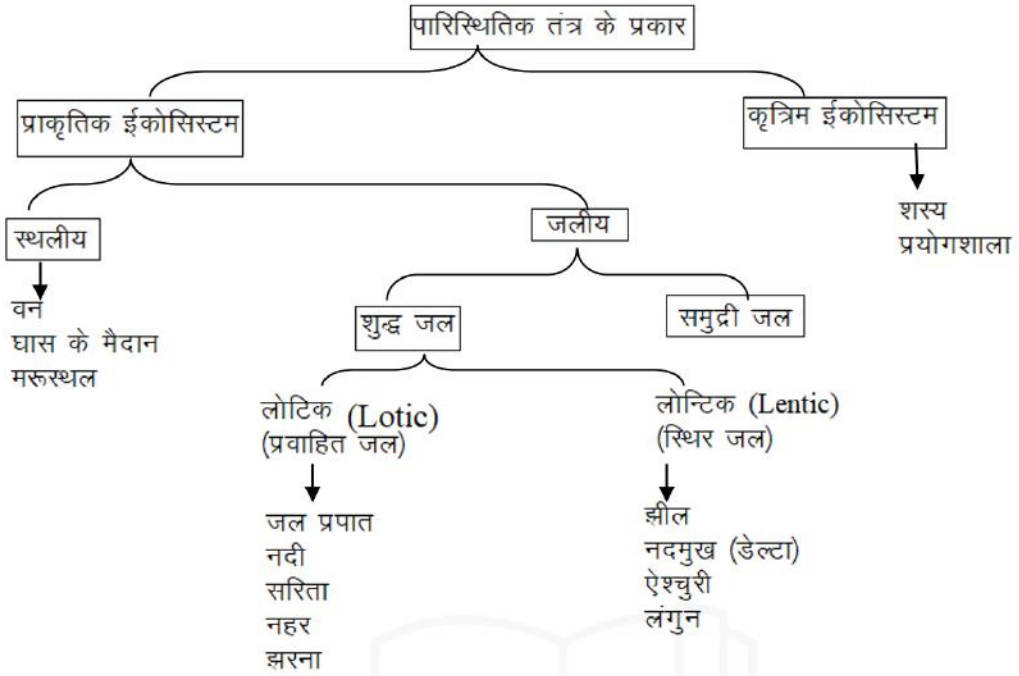

पारिस्थितिक तंत्र के प्रकार

- प्राकृतिक ईकोसिस्टम
  - स्थलीय
    - वन
    - घास के मैदान
    - मरूस्थल
  - जलीय
    - शुद्ध जल
      - लोटिक (Lotic) (प्रवाहित जल)
        - जल प्रपात
        - नदी
        - सरिता
        - नहर
        - झरना
      - लोन्टिक (Lentic) (स्थिर जल)
        - झील
        - नदमुख (डेल्टा)
        - ऐश्चुरी
        - लंगुन
    - समुद्री जल
- कृत्रिम ईकोसिस्टम
  - शस्य
  - प्रयोगशाला

नोट :– स्पेश ईकोसिस्टम (पूर्णतः कृत्रिम) → अंतरिक्ष शैवाल (क्लोरेला)
मछली घर (एक्वेरियम) → सबसे बडा – तारापुर (महाराष्ट्र)

पारिस्थितिक तंत्र के कार्य :–

- किसी भी ईकोसिस्टम के संचालन में उसकी संरचना के साथ–साथ उसके क्रियात्मक स्वरूप की जानकारी भी आवश्यक है।
- ऊर्जा का प्रवाह तथा खनिज पदार्थो का चक्रिकरण दो महत्वपूर्ण पारिस्थितिक प्रक्रम है।

पारिस्थितिक स्तूप (Ecological Pyramids)

- अवधारणा – चार्ल्स एल्टन (1927)
- 'एल्टोनियन पिरामिड' भी कहा जाता है।
- इसमें अपघटक शामिल नहीं होते है।
- उत्पादक से उपभोक्ता तक (शाकाहारी → मांसाहारी)

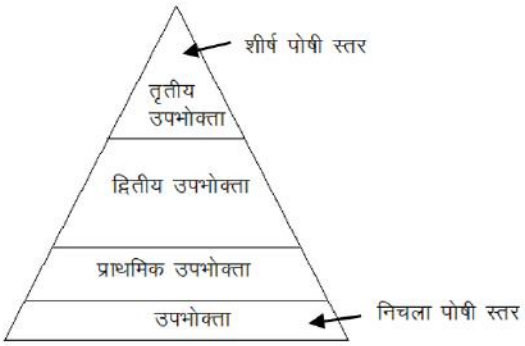

पिरामिड के तीन प्रकार होते है।

1. जीवों की संख्या के स्तूप (Pyramids of Number)
2. जैव भार के स्तूप (Pyramids of Biomass)
3. ऊर्जा के स्तूप (Pyramids of Energy)

पारिस्थितिक स्तूप

संख्या का स्तूप → वृक्ष का स्तूप – ऊल्टा

जैव भार का स्तूप → जल तंत्र उल्टे

ऊर्जा का स्तूप → सदैव ही सीधे होते है।

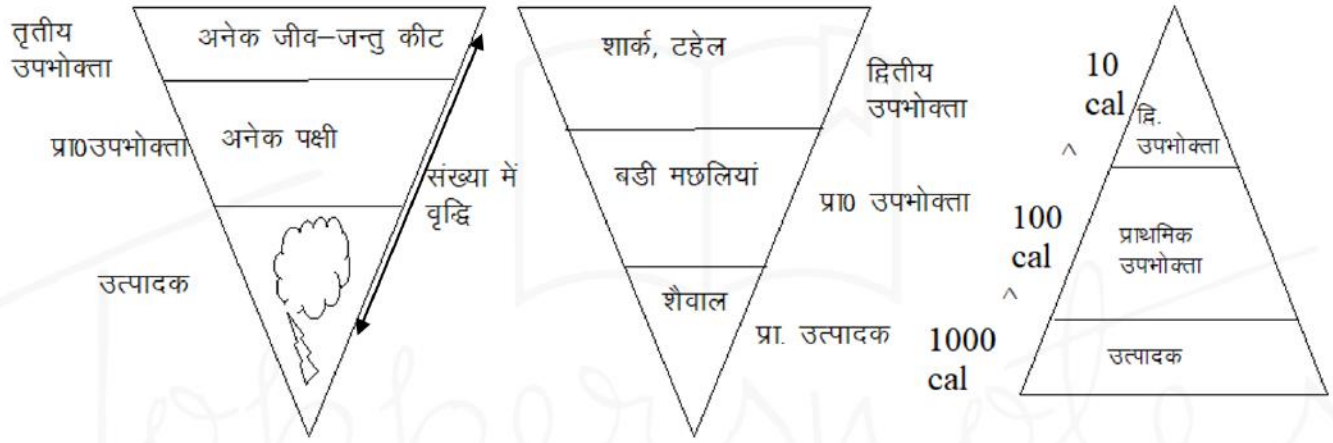

शेष सभी स्तूप सीधे – स्थल तंत्र – सीधे

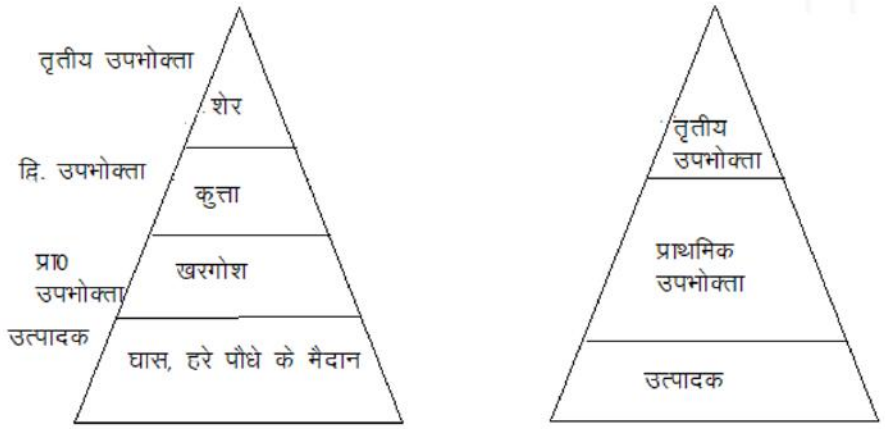

नोट :–

संख्या का स्तूप
- वृक्ष परितंत्र – उल्टा स्तूप
- घास परितंत्र – सीधा स्तूप

ऊर्जा का स्तूप :– सदैव सीधा

जैव भार स्तूप
- जल परितंत्र – उल्टा स्तूप
- वृक्ष परितंत्र – सीधा स्तूप

खाद्य श्रृंखला एवं खाद्य जाल :–

- एक पारिस्थितिक तंत्र में श्रृंखलाबद्ध तरीके से जुड़े जीवों के द्वारा ऊर्जा का प्रवाह एक पथीय होता है। जीवों की इस श्रृंखला को खाद्य श्रृंखला (Food Chain) कहते है।

जैसे –	घास	→	टिड्डा	→	मेंढक	→	साँप	→	मोर
	↓		↓		↓		↓		↓
	उत्पादक		प्रा. उपभोक्ता		द्वि. उपभोक्ता		तृ. उपभोक्ता		शीर्ष उपभोक्ता
	↓		↓		↓		↓		↓
पोषी स्तर (T)	T_1		T_2		T_3		T_4		T_5

e.g. पादप प्लवक → जन्तु प्लवक → छोटी मछली → बड़ी मछली → मनुष्य

खाद्य श्रृंखला के प्रकार :–

खाद्य श्रृंखला

परभक्षी / चारण श्रृंखला
↓
- छोटे जीवों से प्रारम्भ होकर बड़े जीवों की ओर जाती है।
- जीवों का आकार बढ़ता है।
- जीवों की संख्या घटती है।

e.g. घास खाद्य श्रृंखला

परजीवी श्रृंखला
↓
- बड़े जीवों से प्रारम्भ होकर छोटे जीवों की ओर जाती है।
- जीवों का आकार घटता है।
- जीवों की संख्या बढ़ती है।

e.g. जड़े → निमेटोड → जीवाणु

मृतोपजीवी श्रृंखला
↓
- यह छोटी श्रृंखला है।
- मृत जीवों से प्रारम्भ होकर सूक्ष्म जीवों की तरफ चलती है।
- जीवों का आकार घटता है।
- जीवों की संख्या बढ़ती है।

e.g. वन व घास परितंत्र की खाद्य श्रृंखला